NOTES

Ali-Raaz

HISTORY

Chapter-2

समाजवाद एवं साम्यवाद

❖ CONTENTS

- Chapter notes step by step
- Question Answer to Book
- Most Important Objective Questions
- Most Important Short Questions
- Most Important Long Questions

- This notes is very important for board exam
- This notes is made for week students
- This notes is made in very simple language
- If you want to study science chapter-1 with full Concept then you can read these notes

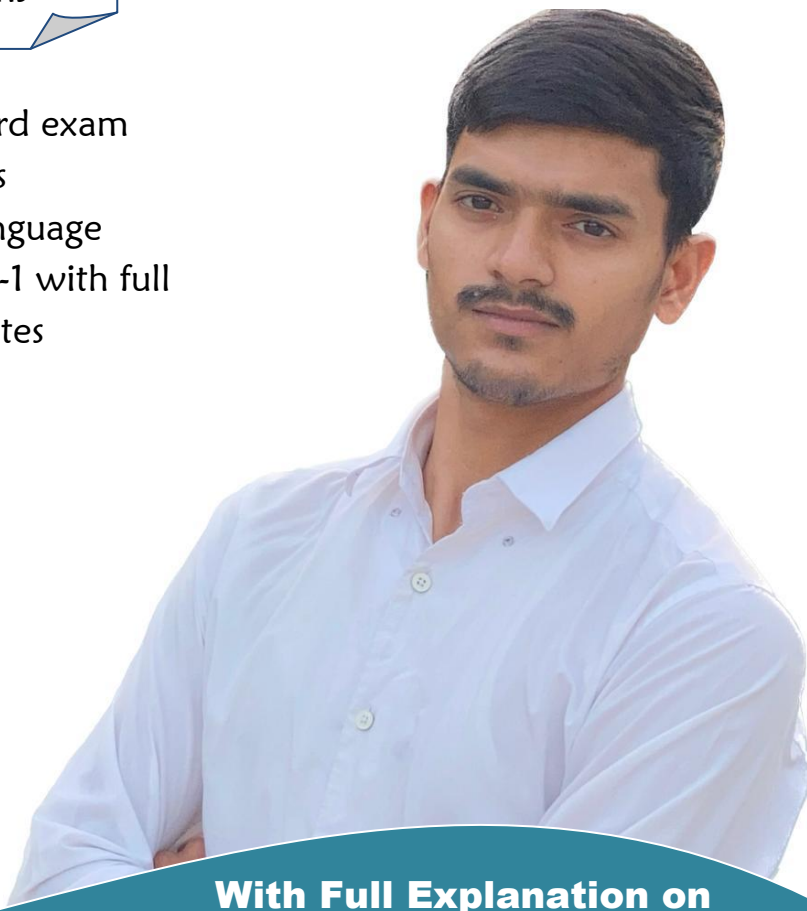

With Full Explanation on

YouTube

समाजवाद एवं साम्यवाद

Socialism and Communism

समाजवाद एक ऐसी विचारधारा है जिसने आधुनिक काल में समाज को एक नया आवाम् दिया ।

❖ समाजवाद क्या है ?

समाजवाद एक ऐसी व्यवस्था या विचारधारा जिसमे उत्पादन निजी लाभ के लिए न होकर सारे समाज के लिए होता है उसे समाजवाद कहा जाता है

1789 की फ्रांसीसी क्रांति ने समाज और अर्थव्यवस्था को फिर से एक नई विचारधाराओं को जन्म दिया। सामाजिक भेद और धार्मिक शासक को समाप्त कर इसने स्वतंत्रता और समानता की भावना पर बल दिया।

- सामाजिक बदलाव के कारण कई सारे अलग अलग विचारधाराओं का उदय हुआ।
  - ✓ उदारवादी अथवा रैडिकल,
  - ✓ रूढ़िवादी या प्रतिक्रियावादी,
  - ✓ अतिवादी,
  - ✓ समाजवादी
  - ✓ साम्यवादी

✓ उदारवादी अथवा रैडिकल,

ये निजी स्वतंत्रता तथा धार्मिक स्वतंत्रता के मानने वाले थे। वे निरंकुश वंशानुगत (राजा द्वाराचलाया गया शासन) शासन के विरोधी भी थे।

✓ अतिवाद

अतिवादी निजी अधिकार और संपत्ति के केंद्रीकरण करने वालो के विरोधी थे। ok

✓ रूढ़िवादी या प्रतिक्रियावादी,

प्रतिक्रियावादी प्राचीन(past) सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था को बनाए रखना चाहते थे। वे उदारवादियों और अतिवादियों की नीतियों के विरोधी थे।

✓ समाजवादिय और साम्यवादिय

समाजवादियों और साम्यवादियों की सोच इन सभी के विचारों से अलग थी। ये सामाजिक-आर्थिक बदलाव के आधार पर वे समाज और अर्थव्यवस्था को फिर से एक नई सोच के साथ बदलना चाहते थे।

❖ औद्योगिक क्रांति

औद्योगिक (industrial) क्रांति सबसे पहले इंगलैंड में हुई। इससे एक ओर आर्थिक स्तिथि में बदलाव हुई तो दूसरी तरफ़ समाज में पूँजीपति और श्रमिक वर्ग का उदय हुआ।

➢ **औद्योगिक क्रांति के कारण दो तरह के वर्गों का उदय हुआ**

1. पूँजीपति वर्ग
2. श्रमिक वर्ग

1. पूँजीपति वर्ग

पूँजीपतियों ने अपने हाथों में पूँजी और मुनाफा का केंद्रीकरण कर लिया।

2. श्रमिक वर्ग

श्रमिकों की स्थिति दयनीय बनी रही।

इस प्रकार, औद्योगिक क्रांति ने दो प्रकार की आर्थिक व्यवस्था और दो सामाजिक वर्गों को उत्पन्न कर दिया।

औद्योगिक क्रांति के बाद दो वर्ग बने जिसके अमीर और अमीर होने लगे ग़रीब ग़रीब होने लगे इस समस्या को देख कर कुछ चिंतक इस व्यवस्था में बदलाव लाना चाहते थे उनका मानना था कि नागरिक और कानूनी समानता से भी अधिक महत्त्वपूर्ण सामाजिक और आर्थिक समानता है तथा इसके लिए अधिक प्रयास की आवश्यकता है। ये चिंतक समाजवादी (socialists) के नाम से जाने गए।

➢ **चिंतक समाजवादी (socialists)**

इन लोगों ने ऐसी अर्थव्यवस्था के निर्माण की बात कही जिसमें उत्पादन के साधनों एवं पूँजी पर राज्य का नियंत्रण हो। उनका यह भी मानना था कि उत्पादन निजी लाभ के लिए न होकर पूरे समाज के लिए हो

समाजवादी विचारधारा की उत्पत्ति

समाजवादी विचारधारा 1789 में फ़्रांसिसी क्रांति के बाद आई और इसका स्रोत 18वीं शताब्दी के प्रबिधन आंदोलन के लेखों में देखा जा सकता है

जैसे- सेट साईमन,राबर्ट ओवेन,चार्ल्स फुरिए,लुई ब्लॉ आदि आरंभिक आदर्शनिऐं समाजवादी थे

➢ **समाजवादी आंदोलन और विचारधारा के मुख्यतः दो भागों में विभक्त की जा सकती है-**

i. आरंभिक समाजवादी अथवा कार्ल मार्क्स के पहले के समाजवादी

ii. कार्ल मार्क्स के बाद के समाजवादी।

1.आरंभिक समाजवादी-

आरंभिक समाजवादी को आदर्शवादी' या 'स्वप्नदर्शी' (Utopian) समाजवादी कहे गए। क्योंकि वे उच्च और सिद्धांतवादी आदर्श से प्रभावित होकर 'वर्गसंघर्ष' की नहीं, बल्कि 'वर्गसमन्वय' की बात करते थे।

2.कार्ल मार्क्स के बाद के समाजवादी।

कार्ल मार्क्स के बाद के समाजवादी जैसे फ्रेडरिक एंगेल्स, कार्ल मार्क्स और उनके बाद के चिंतक को 'साम्यवादी' कहे जाये है इन सभी में 'वर्गसमन्वय' के स्थान पर वर्ग विरोध की बात कही। इन लोगों ने समाजवाद की एक नई व्याख्या प्रस्तुत की जिसे **वैज्ञानिक समाजवाद भी** कहा जाता है।

- **आदर्शवादी समाजवादी चिंतक-**

आदर्शवादी समाजवादी चिंतकों में सेंट साइमन, चार्ल्स फूरिए, लुई ब्लाँ तथा रॉबर्ट ओवेन के नाम विशेष रूप से आते हैं।

❖ सेंट साइमन

सेंट-साइमन (17 अक्टूबर 1760 - 19 मई 1825), जिन्हें हेनरी डी सेंट-साइमन के नाम से जाना जाता है , एक फ्रांसीसी राजनीतिक , आर्थिक और समाजवादी सिद्धांतकार और व्यापारी थे। जिनके विचारों का राजनीति , अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र और विज्ञान के दर्शन पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा ।

सेंट साइमन का मानना था कि राज्य और समाज का पुनर्निर्माण (reorganization) इस प्रकार होना चाहिए जिससे शोषण की प्रक्रिया समाप्त हो तथा समाज के गरीब तबकों(sections) की स्थिति में भी सुधार लाया जा सके। इसके लिए सभी लोगों को संघटित रूप से काम करना चाहिए। राज्य और समाज को निर्धन वर्गों के भौतिक और नैतिक उत्थान के लिए कार्य करना चाहिए। उनका यह भी मानना था कि प्रत्येक को उसकी क्षमता के अनुसार कार्य तथा प्रत्येक को उसके कार्य के अनुसार पारिश्रमिक मिलना चाहिए। आगे चलकर सेंट साइमन की यह उक्ति समाजवाद का मूलमंत्र बन गई।

- ✓ सेंट साइमन के सिद्धांतों को चार्ल्स फूरिए ने आगे बढ़ाया। फूरिए औद्योगिकीकरण का विरोधी था।

❖ चार्ल्स फूरिए

चार्ल्स फूरियर का जन्म 7 अप्रैल, 1772 को बेसनकॉन में एक धनी कपड़ा व्यापारी चार्ल्स फूरियर और मैरी मुगुएट के पुत्र के रूप में हुआ था। उन्होंने जेसुइट कॉलेज डी बेसनकॉन (1781-1787) में ठोस शास्त्रीय शिक्षा प्राप्त की , लेकिन ज्यादातर स्व-शिक्षा प्राप्त की। वह अपने मूल स्थान बेसनकॉन से फ्रांस के दूसरे सबसे बड़े शहर ल्योन चले गए। अपने परिवार में एकमात्र जीवित पुत्र के रूप में , उनसे उम्मीद की गई थी कि वे अपने पिता के बाद पारिवारिक व्यवसाय के मुखिया बनेंगे, और उन्होंने छह साल की उम्र में कपड़ा व्यापार में अपनी शागिर्दी शुरू की। उन्होंने खुद को व्यापारिक के लिए बेरोज़गार पाया

चार्ल्स फूरियर का मानना था कि श्रमिकों को बड़े कारखानों में काम करने के बदले छोटे नगरों एवं कस्बों में छोटी औद्योगिक इकाइयों में काम करना चाहिए। इससे पूँजीपति उनका शोषण नहीं कर पाएँगे। किसानों की स्थिति में भी वह सुधार लाना चाहता था।

फूरियर ने अपने जीवन के अंतिम वर्ष पेरिस में बिताए , जहाँ 10 अक्टूबर, 1837 को उनकी मृत्यु हो गई।

❖ लुई ब्लॉ

लुई ब्लाँ (Louis Jean Joseph Charles Blanc) ; (29 अक्टूबर, 1811 – 6 दिसम्बर, 1882) फ्रांस के राजनेता एवं इतिहासकार थे। वे समाजवाद के समर्थक तथा सुधारों के पक्षधर थे। ग्रामीण गरीबों को रोजगार देने के लिये उन्होने सहकारी संस्थाओं के निर्माण का सुझाव दिया।

- उदारवादी चिंतकों के विपरीत लुई ब्लॉक राज्य की शक्ति में विस्तार चाहता था ताकि श्रमिकों के हितों की सुरक्षा हो सके।
- इनका मानना था कि श्रमिकों की आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए इनके राजनीतिक शक्ति में वृद्धि आवश्यक है अर्थात श्रमिकों का सरकार पर नियंत्रण होना चाहिए तभी वह सरकार श्रमिकों के हितों में काम करेगी।
- राज्य के द्वारा विभिन्न शिल्प शालाओं अथवा सामाजिक कार्यशालाओं की स्थापना की जानी चाहिए फिर इन सामाजिक कार्यशालाओं द्वारा श्रमिकों को आर्थिक व तकनीकी सहायता दी जानी चाहिए उन्हें पूजी प्रदान कराई जानी चाहिए ताकि वह अपने स्तर से उत्पादन कर सकें इस से श्रमिकों की स्थिति में व्यापक सुधार होगा।
- इंगलैंड में आदर्शवादी समाजवाद का जनक प्रसिद्ध उद्योगपति रॉबर्ट ओवेन था।।

❖ रॉबर्ट ओवेन-

रॉबर्ट ओवेन (Robert Owen) (मई 14, 1771 - नवंबर 17, 1858) एक समाज-सुधारक एवं उद्यमी थे। उनकी गणना समाजवाद एवं सहकारिता आन्दोलन के संस्थापकों में की जाती है।

इंगलैंड में औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप कारखानेदारी व्यवस्था का उदय और विकास हुआ। इसमें श्रमिकों का शोषण किया गया। इसे रोकने के लिए ओवेन ने एक आदर्श समाज की स्थापना का प्रयास किया। उसने **स्कॉटलैंड के न्यू लूनार्क** नामक स्थान पर एक आदर्श कारखाना और मजदूरों के आवास की व्यवस्था की। इसमें श्रमिकों को अच्छा भोजन, आवास और उचित मजदूरी देने की व्यवस्था की गई। श्रमिकों की शिक्षा, चिकित्सा की भी व्यवस्था की गई। साथ ही, काम के घंटे घटाए गए और बाल-मजदूरी समाप्त की गई। वृद्धावस्था बीमा योजना भी लागू की गई। ओवेन के इस प्रयास से मुनाफा में वृद्धि हुई। इससे वह संतुष्ट हुआ। उसने माना कि संतुष्ट श्रमिक ही वास्तविक श्रमिक है। यद्यपि ओवेन का आदर्शवाद पूरी तरह सफल नहीं हो सका तथापि ब्रिटिश सरकार ने 1819 में फैक्टरी कानून पारित कर श्रमिकों की स्थिति में सुधार लाने का प्रयास किया। ब्रिटेन में चार्टिस्ट आंदोलन (1838) भी हुआ। 1833 में फैक्टरी अधिनियम और अन्य कानूनों द्वारा श्रमिकों को सुविधाएँ दी गईं।

➢ 19वीं शताब्दी में समाजवादी विचारधाराओं की विशेषताएँ-

19वीं शताब्दी में समाजवादी विचारधारा का तेजी से प्रसार हुआ।

- ✓ फ्रांस में लुई ब्लाँ ने सामाजिक कार्यशालाओं की स्थापना कर पूँजीवाद की बुराइयों को समाप्त करने की बात कही।
- ✓ जर्मनी भी समाजवादी विचारधारा से अपने को अलग नहीं रख सका।
- ✓ रूस में भी समाजवाद ने अपनी जड़ें जमा लीं।
- ✓ समाजवादियों ने निजी संपत्ति के अधिकार के विरुद्ध समाज द्वारा नियंत्रित संपत्ति की बात की।
- ✓ आरंभिक समाजवादी अपने आदर्शों की पूर्ति में सफल नहीं हो सके, लेकिन इन लोगों ने ही पहली बार पूँजी और श्रम के बीच संबंध निर्धारित करने का प्रयास किया।
- ✓ कार्ल मार्क्स ने आरंभिक समाजवादियों से प्रेरणा लेकर ही नई समाजवादी व्याख्या प्रस्तुत की।

साम्यवाद

Communism

❖ कार्ल मार्क्स-

कार्ल मार्क्स-समाजवादी विचारधारा को आगे बढ़ाने में कार्ल मार्क्स (1818-83) ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

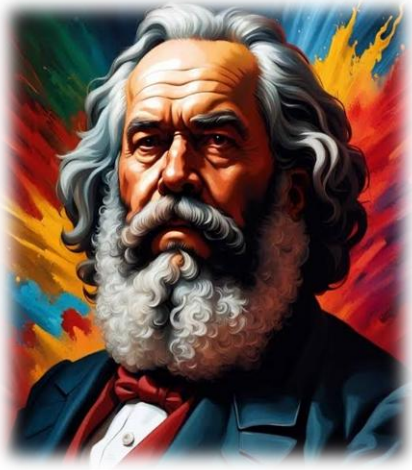

- मार्क्स का जन्म जर्मनी के राइन प्रांत के ट्रियर नगर में एक यहूदी परिवार में हुआ था।
- उनके पिता का नाम हेनरिक मार्क्स था। वे एक प्रसिद्ध वकील थे।
- कार्ल मार्क्स ने बॉन तथा बर्लिन विश्वविद्यालयों में शिक्षा ग्रहण की। उसने अर्थशास्त्र का गहन अध्ययन किया।
- मार्क्स पर रूसो,हीगेल की विचारधारा का गहरा प्रभाव था।
- 1843 में उसने अपने बचपन की मित्र जेनी से विवाह किया।
- विवाह के बाद वह पेरिस गया जहाँ 1844 में उसकी भेंट फ्रेडरिक एंगेल्स के साथ हुई। एंगेल्स के विचारों से प्रभावित होकर मार्क्स भी श्रमिकों की स्थिति पर चिंतन करने लगा।

मार्क्स और एंगेल्स ने मिलकर 1848 में कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो (Communist Manifesto) अथवा साम्यवादी घोषणापत्र प्रकाशित किया। कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो को आधुनिक समाजवाद का जनक माना जाता है। मार्क्स ने पूँजीवाद की घोर निंदा की और श्रमिकों के हक की बात उठाई। मजदूरों को अपने हक के लिए लड़ने को उसने उकसाया । उसने लिखा, श्रमिकों को अपनी बेड़ियों के अलावा कुछ भी नहीं खोना है। उन्हें विश्व पर विजय प्राप्त करनी है। दुनिया के श्रमिकों एक हो। मार्क्स ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक दास कैपिटल (Das Kapital) का प्रकाशन 1867 में किया। इसे समाजवादियों की बाइबिल कहा जाता है। यही दो पुस्तकें मार्क्सवादी दर्शन के मूलभूत सिद्धांतों को प्रस्तुत करती हैं। मार्क्सवादी दर्शन साम्यवाद (Communism) के नाम से प्रसिद्ध हुआ। मार्क्स के क्रांतिकारी विचारों के कारण उसे जर्मनी से निष्कासित कर दिया गया। उसने अपना शेष जीवन लंदन में व्यतीत किया।

❖ मार्क्सवादी दर्शन

मार्क्सवादी दर्शन मार्क्स ने समाजवाद की नई व्याख्या प्रस्तुत की। उसने पहली बार इतिहास की आर्थिक (भौतिक) व्याख्या की। उसका मानना था कि आर्थिक गतिविधियाँ ही मानवजीवन और इतिहास के स्वरूप को निर्धारित करती हैं। मार्क्स का मानना था कि मानव इतिहास वर्ग-संघर्ष (class struggle) का इतिहास है। इतिहास उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण के लिए दो वर्गों में चल रहे निरंतर संघर्ष की कहानी है। वे प्रत्येक ऐतिहासिक घटना के लिए आर्थिक कारणों को उत्तरदायी मानते हैं।

- **मार्क्स ने आदिम साम्यवादी युग से समाजवादी युग तक के इतिहास कोपाँच चरणों में विभक्त किया।**
  - i. आदिम साम्यवादी युग
  - ii. दासता का युग
  - iii. सामंती युग
  - iv. पूँजीवादी युग
  - v. समाजवादी युग।

- **कार्ल मार्क्स द्वारा निश्चित सिद्धांतों में प्रमुख सिद्धांत हैं-**
  - i. द्वंद्वात्मक भौतिकवाद का सिद्धांत
  - ii. वर्ग-संघर्ष का सिद्धांत
  - iii. इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या
  - iv. मूल्य एवं अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत
  - v. राज्यहीन एवं वर्ग-विहीन समाज की स्थापना का सिद्धांत।

➢ मोटे तौर पर इतिहास के तीन चरण हैं -

i. प्राचीन,
ii. मध्य
iii. आधुनिक

❖ प्राचीन

प्रथम चरण में स्वतंत्र लोगों और गुलामों के बीच संघर्ष होता है।

❖ मध्य

द्वितीय चरण में सामंतों और किसानों के बीच संघर्ष होता है।

❖ आधुनिक

अंतिम चरण में पूँजीपतियों और श्रमिकों के बीच संघर्ष होता है।

❖ पूँजीवादी समाज से आप क्या समझते है?

वे समाज जो अपनी पूँजी के आधार पर मजदूरों द्वारा अर्जित मुनाफा को हड़प लेता है।उसे ही पूँजीवादी समाज कहते है

❖ श्रमिक समाज से आप क्या समझते है?

वे समाज जो अपनी पूँजी के आधार पर मजदूरों द्वारा अर्जित मुनाफा को हड़प लेता है। उसी मज़दूर को श्रमिक समाज कहते है

➢ कार्ल मार्क्स का मानना था की पूँजीवादी व्यवस्था को समाप्त किए बिना श्रमिकों की स्थिति में सुधार नहीं आ सकता है।

रूस की क्रांति

➢ रूस में दो क्रांतियाँ हुईं -

- 1905 में
- 1917 में

❖ 1905 रूस में क्रांति

1905 में रूस की जनता ने अत्याचारी जारशाही को समाप्त करने का प्रयास किया, लेकिन यह प्रयास विफल हो गया। जार (रूसी सम्राट) का शासन वैसे ही चलता रहा।

रूस मे 1905 ई. में एक क्रांति हुई थी, जिसके द्वारा रूस में वैधानिक राजतंत्र की स्थापना करने का प्रयास किया गया था किन्तु आपसी झगड़ों के कारण यह क्रांति सफल नहीं हो सकी और शासन पर पुनः जार का अधिकार स्थापित हो गया। इस क्रांति का स्पष्ट परिणाम यह हुआ कि उसने रूस की साधारण जनता को राजनीतिक अधिकारों का परिचय करा दिया था। उनको ज्ञात हो गया कि मत (वोट) का क्या अर्थ है ? ड्यूमा या दूसरे शब्दों में पार्लियामेंट के सदस्यों का निर्वाचन किस प्रकार किया जाना चाहिये ? सरकार को लोकमत के अनुसार अपनी नीति का निर्धारण कर public interest के कार्यों को करने के लिये अग्रसर होना चाहिये। अपने राजनीतिक अधिकारों से परिचित हो जाने के कारण रूस की जनता समझ गई कि रूस में भी सम्पूर्ण रूप में लोकतंत्र शासन की स्थापना होनी चाहिये जहां साधारण जनता के हाथ में शासन सत्ता हो।

❖ 1917 रूस में पुनः क्रांति

1917 में रूस में पुनः क्रांति हुई। इस बार दो क्रांतियाँ हुईं।

- ✓ फरवरी क्रांति
- ✓ अक्टूबर क्रांति अथवा बोल्शेविक क्रांति

➢ फरवरी क्रांति

यह क्रांति मार्च 1917 में हुई। यह क्रांति फरवरी क्रांति के नाम से विख्यात है। इस क्रांति के कारण 12 मार्च 1917 को जार निकोलस द्वितीय को राजगद्दी छोड़नी पड़ी और रूस पर सदियों से चला आ रहा रोमोनोव वंश का शासन समाप्त हो गया। पुराने रूसी कैलेंडर (जूलियन कैलेंडर, Julian calendar) के अनुसार, जार ने 27 फरवरी 1917 को गद्दी त्याग दी थी। इसलिए, 1917 की रूस की पहली क्रांति फरवरी क्रांति के नाम से जानी जाती है।

➢ अक्टूबर क्रांति अथवा बोल्शेविक क्रांति

1917 में ही रूस में दूसरी बार क्रांति हुई। यह क्रांति अक्टूबर क्रांति अथवा बोल्शेविक क्रांति के नाम से जानी जाती है। यद्यपि यह क्रांति 7 नवंबर 1917 को हुई **थी (ग्रेगोरियन कैलेंडर , Gregorian calendar),** परंतु पुराने रूसी कैलेंडर के अनुसार वह दिन 25 अक्टूबर 1917 था। इसलिए , बोल्शेविक क्रांति, अक्टूबर क्रांति भी कहलाती है। यह क्रांति **मेन्शेविकों** (अल्पमतवाले साम्यवादियों) और **वोल्शेविकों** (बहुमतवाले साम्यवादियों) के बीच सत्ता-संघर्ष के कारण हुई। राजतंत्र की समाप्ति के बाद सत्ता मेन्शेविक दल के नेता **केरेन्सकी** के हाथों में आई , परंतु उसकी सरकार अलोकप्रिय थी। सरकार के विरुद्ध असंतोष बढ़ता जा रहा था। ऐसी स्थिति में **स्विट्जरलैंड** से वापस लौटकर बोल्शेविक दल के नेता **लेनिन** ने **ट्रॉटस्की** की सहायता से केरेन्सकी की सरकार का तख्ता पलट दिया। अब सत्ता बोल्शेविक दल के नेता **लेनिन** के हाथों में आई। इसके साथ ही रूस के new construction का कार्य आरंभ हुआ।

❖ 1917 की रूसी क्रांति के क्या कारण थे

1917 की रूसी क्रांति के निम्नलिखित कारण थे-

➢ 1917 की बोल्शेविक क्रांति (अक्टूबर क्रांति) के कारण

राजनीतिक कारण

- ✓ निरंकुश एवं अत्याचारी शासन
- ✓ रूसीकरण की नीति
- ✓ राजनीतिक दलों का उदय
- ✓ नागरिक एवं राजनीतिक स्वतंत्रता का अभाव
- ✓ रूस की राजनीतिक प्रतिष्ठा में कमी
- ✓ 1905 की क्रांति का प्रभाव
- ✓ प्रथम विश्वयुद्ध में रूस की पराजय
- ✓ जार निकोलस द्वितीय और जारीना की भूमिका

सामाजिक कारण

- ✓ किसानों की स्थिति
- ✓ किसानों का विद्रोह
- ✓ मजदूरों की स्थिति
- ✓ सुधार आंदोलन

आर्थिक कारण

- ✓ दुर्बल आर्थिक स्थिति
- ✓ औद्योगिकीकरण की समस्या

धार्मिक कारण

- ✓ धार्मिक स्वतंत्रता की कमी

❖ राजनीतिक कारण

✓ निरंकुश एवं अत्याचारी शासन-

क्रांति के पूर्व रूस में रोमोनोव वंश का शासन था। इस वंश के शासकों ने स्वेच्छाचारी राजतंत्र की स्थापना की। रूस का सम्राट जार अपने-आपको ईश्वर का प्रतिनिधि समझता था। वह सर्वशक्तिशाली था। राज्य की सारी शक्तियाँ उसी के हाथों में केंद्रित थीं। उसकी सत्ता पर किसी प्रकार का नियंत्रण नहीं था। राज्य के अतिरिक्त वह रूसी चर्च का भी प्रधान था। इतना शक्तिशाली होते हुए भी वह प्रजा के सुख-दुःख के प्रति पूर्णतः लापरवाह था। वह दिन-रात चापलूसों और चाटुकारों से घिरा रहता था। अतः , प्रशासनिक अधिकारी मनमानी करते थे। प्रजा जार और उसके अधिकारियों से भयभीत और त्रस्त रहती थी। ऐसी स्थिति में प्रजा की स्थिति बिगड़ती गई और उनमें असंतोष बढ़ता गया।

✓ रूसीकरण की नीति-

रूस में विभिन्न प्रजातियों के निवासी थे। इनमें स्लावों की संख्या सबसे अधिक थी। इनके अतिरिक्त फिन , पोल, जर्मन, यहूदी इत्यादि भी थे। सबों की भाषा, रीति-रिवाज अलग-अलग थे। इसलिए, रूसी सरकार ने देश की एकता के लिए रूसीकरण की नीति अपनाई। संपूर्ण देश पर रूसी भाषा , शिक्षा और संस्कृति लागू करने का प्रयास किया गया। जार की नीति थी - **एक जार, एक चर्च और एक रूस ।** सरकार की इस नीति से अल्पसंख्यक चिंतित हो गए। 1863 में पोलों ने रूसीकरण की इस नीति के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। यद्यपि यह विद्रोह दबा दिया गया, परंतु इससे अल्पसंख्यकों में विरुद्ध की भावना बढ़ती गई।

✓ राजनीतिक दलों का उदय-

19वीं शताब्दी रूस में राजनीतिक दलों का दिखावा हुआ। उत्तेजना जागरण के कारण जारशाही के विरुद्ध जनता संगठित होने लगी ' किसानों की समस्याओं को लेकर नारोदनिक आंदोलन चलाया गया जिसके प्रमुख नेता हर्जेन, चर्नीशेवस्की और मिखाइल बाकनिन थे। इन लोगों ने कृषक (किसान) समाजवाद की स्थापना का नारा दिया। कार्ल मार्क्स के एक प्रशंसक और समर्थक प्लेखानोव, जिसे रूस का पहला साम्यवादी माना जाता है , 1883 में रूसी **सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी (Russian Social Democratic Party)** की स्थापना की। इस दल ने मजदूरों को संघर्ष के लिए संगठित करना आरंभ किया। मजदूर मार्क्स के दर्शन से प्रभावित हुए। प्लेखानोव के अतिरिक्त लेनिन ने भी मार्क्सवाद का प्रचार किया। 1900 में **सोशलिस्ट रिवोल्यूशनरी पार्टी (Socialist Revolutionary Party)** की स्थापना हुई। इसने किसानों की समस्याओं पर ध्यान दिया। लेनिन ने इस्करा (Iskra) नामक पत्र का संपादन कर क्रांतिकारी आदर्शों का प्रचार किया। 1903 में संगठनात्मक मुद्दों को लेकर सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी दो दलों में विभक्त हो गई- **बोल्शेविक** (बहुमतवाले) एवं मेन्शेविक (अल्पमतवाले)। मेन्शेविक संवैधानिक रूप से देश में राजनीतिक परिवर्तन चाहते थे तथा मध्यवर्गीय क्रांति के समर्थक थे। परंतु, बोल्शेविक इसे असंभव मानते थे और क्रांति के द्वारा परिवर्तन लाना चाहते थे जिसमें मजदूरों की विशेष भूमिका हो (सर्वहारा क्रांति)। 1912 में बोल्शेविक समाचारपत्र प्रावदा (Pravda) का प्रकाशन कर दल की नीतियों का प्रचार किया गया। इससे बोल्शेविक दल का प्रभाव अधिक व्यापक हो गया। इसी दल के नेता लेनिन के नेतृत्व में 1917 की रूसी क्रांति हुई।

✓ नागरिक एवं राजनीतिक स्वतंत्रता का अभाव–

निरंकुश जारशाही के अंतर्गत रूसी जनता को किसी प्रकार का राजनीतिक अधिकार नहीं था। विचार-अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता नहीं थी। व्यक्तिगत और प्रेस की भी स्वतंत्रता नहीं थी। जनता की कार्यवाहियों पर जासूस कड़ी निगरानी रखते थे। पुलिस किसी भी व्यक्ति को गिरफ्तार कर कारण बताए बिना साइबेरिया के यातना-गृह में भेज सकती थी। सरकार की अनुमति के बिना कोई न तो रूस से बाहर जा सकता था और न ही रूस में प्रवेश कर सकता था। देश में राजनीतिक संस्थाओं का अभाव था। रूस की संसद ड्यूमा (Duma) में भी राजतंत्र-समर्थक ही थे। इससे जनता का असंतोष बढ़ा।

✓ रूस की राजनीतिक प्रतिष्ठा में कमी-

पीटर महान के शासनकाल में (1682-1725) रूस की शक्ति और प्रतिष्ठा में अत्यधिक वृद्धि हुई , परंतु 19वीं शताब्दी से उसकी शक्ति और प्रतिष्ठा में कमी आ गई। बाल्कन युद्धों में उसे सफलता नहीं मिली। **1854-56 के क्रीमिया युद्ध में** भी रूस की पराजय हुई। 1904-05 के रूसी-जापानी युद्ध में पराजय से रूस को गहरा आघात लगा। छोटे-से एशियाई देश से पराजित होने से रूस की महानता का भ्रम टूट गया। उसकी प्रतिष्ठा नष्ट हो गई। जनता में भी असंतोष और विद्रोह की भावना बढ़ी। इस कारण, 1905 में रूस में पहली क्रांति हुई।

✓ 1905 की क्रांति का प्रभाव-

1904 तक बढ़ती महँगाई के कारण श्रमिकों की स्थिति दयनीय हो गई। उनकी वास्तविक मजदूरी में बीस प्रतिशत की गिरावट आई। ऐसी स्थिति में बड़ी संख्या में श्रमिकों ने मजदूरी में बढ़ोतरी , काम के घंटों में कमी करने तथा अपनी स्थिति में सुधार के लिए हड़तालें कीं। सेंट पीटर्सबर्ग की हड़ताल में एक लाख से अधिक श्रमिकों ने भाग लिया। ऐसी ही परिस्थिति में 9 जनवरी 1905 (ग्रेगोरियन कैलेंडर के अनुसार 22 जनवरी) के **खूनी रविवार** (लाल रविवार) के दिन सेना ने निहत्थे मजदूरों और उनके परिवार पर गोली चलाई जिसमें हजारों लोग मारे गए एवं घायल हुए। ये लोग रोटी की माँग करते हुए जुलूस के रूप में **सेंट पीटर्सबर्ग** स्थित राजमहल की ओर जा रहे थे। इस नरसंहार से रूसी स्तब्ध रह गए। सेना और नौसेना में भी इसकी व्यापक प्रतिक्रिया हुई एवं विद्रोह की स्थिति उत्पन्न हो गई। देशभर में हड़तालें हुईं। छात्रों ने विश्वविद्यालयों का बहिष्कार किया। मध्यम वर्ग के लोगों ने भी नागरिक स्वतंत्रता की कमी को लेकर विरोध प्रकट किया।

विद्रोह पर नियंत्रण करने के लिए जार ने सुधारों का दिखावा किया। ड्यूमा (प्रातिनिधिक संस्था) का गठन किया गया। इसका कोई परिणाम नहीं निकला। अतः , एक के बाद एक दो ड्यूमाएँ भंग कर दी गईं। तीसरे में जार ने प्रतिक्रियावादियों को सदस्य बनाया। सरकार ने इस विद्रोह को दबा दिया। जनता को संतुष्ट करने के लिए उसने ड्यूमा (Duma) के पुनर्गठन एवं इसकी सहमति के बिना कोई कानून नहीं बनाने का आश्वासन (promise) दिया। रूसी-जापानी युद्ध में लाखों रूसी सैनिक हताहत हुए। कृषि और उद्योग पर भी युद्ध का विनाशकारी प्रभाव पड़ा। बड़े स्तर पर युद्ध में सेना की भरती से कारखानों में काम करनेवाले श्रमिकों की कमी हो गई। सेना को रसद की आपूर्ति करने से रोटी की कमी हो गई। रोटी के लिए जगह-जगह दंगे होने लगे। 1905 की क्रांति ने 1917 की क्रांति की पृष्ठभूमि तैयार कर दी।

❖ सामाजिक कारण

✓ किसानों की स्थिति-

1861 तक रूस में अधिकांश किसान **बँधुआ मजदूर** थे। वे सामंतों के अधीन थे और जमीन से बँधे हुए थे। क्रीमिया युद्ध में पराजय के उपरांत जार **एलेक्जेंडर द्वितीय** ने 1861 में किसानों को राहत देने के लिए कृषिदासता (serfdom) की प्रथा समाप्त कर दी। इससे किसानों को कुछ राहत तो मिली, परंतु उनकी स्थिति में कोई विशेष सुधार नहीं हुआ। किसानों को जमीन तो मिली, लेकिन उसके लिए भारी कीमत चुकानी पड़ी। इससे उनपर कर्ज का बोझ बढ़ गया। कृषि को विकसित करने का कोई प्रयास नहीं हुआ। किसानों के पास छोटे-छोटे भूखंड थे जिनपर वे परंपरागत ढंग से खेती करते थे। उनके पास धन नहीं था कि वे कृषि का विकास कर उपज बढ़ा सकें। दूसरी ओर, उनपर कर्ज का बोझ भी डाल दिया गया। इससे उनकी स्थिति दयनीय होती चली गई। कर्ज चुकाने के लिए उन्हें अपनी जमीन गिरवी रखनी पड़ी अथवा बेचनी पड़ी। अतः, वे पुनः खेतिहर मजदूर मात्र बनकर रह गए।

✓ किसानों का विद्रोह-

रूसी समाज में अधिक संख्या में होने के बावजूद किसानों की स्थिति सबसे अधिक खराब थी। अपनी स्थिति से मजबूर होकर किसानों ने बार-बार विद्रोह किए। एक अनुमान के अनुसार, 1858-60 के मध्य रूसी किसानों ने 284 बार विद्रोह किए। बाध्य होकर जार ने 1861 में कृषिदासता को समाप्त कर दिया, परंतु इससे किसानों की स्थिति में कोई विशेष सुधार नहीं हुआ। अतः, उनके विद्रोह होते रहे। 1905 के बाद किसान-विद्रोहों की संख्या बढ़ती ही गई। किसानों का समर्थन प्राप्त करने के लिए रूसी प्रधानमंत्री **पीटर स्टोलीपीन** (1906-11) ने किसानों को जमीन खरीदने को उत्प्रेरित किया। इससे किसानों का संपन्न कुलक वर्ग उभरा। पीटर का मानना था कि सरकार कुलकों पर क्रांतिकारियों के विरुद्ध भरोसा कर सकती थी, परंतु साधारण किसान वर्ग की स्थिति दयनीय बनी रही। अतः, किसान 1917 की क्रांति के मजबूत स्तंभ बन गए। लेनिन ने भी अपनी अप्रैल थीसिस (April Thesis) में जमीन अथवा किसानों को पहला स्थान दिया।

✓ मजदूरों की स्थिति –

यद्यपि रूस औद्योगिक दृष्टि से यूरोप का सबसे पिछड़ा राष्ट्र था, परंतु 19वीं शताब्दी के बाद से रूस में भी उद्योगों का विकास हुआ। इससे मजदूरों की संख्या बढ़ी, परंतु किसानों के समान उनकी स्थिति भी दयनीय थी। उनपर अनेक प्रतिबंध लगे हुए थे। सरकार उन्हें संगठित होने देना नहीं चाहती थी। इसलिए, श्रमिक संघों के निर्माण पर रोक लगा दी गई थी। मजदूरों को आवश्यकता से अधिक घंटों तक काम करना पड़ता था, उन्हें मजदूरी कम दी जाती थी तथा कारखानों में असहनीय स्थिति में काम करना पड़ता था। इसके विरोध में मजदूरों ने संघर्ष आरंभ किया और हड़ताल की। बाध्य होकर सरकार ने कारखाना अधिनियम बनाकर मजदूरों को कुछ सुविधाएँ देने का प्रयास किया, परंतु इससे स्थिति में विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। क्षुब्ध मजदूरों ने 1905 में देशव्यापी हड़ताल की जिसमें लाखों मजदूरों ने भाग लिया। 1905-17 के बीच भी मजदूरों की अनेक हड़तालें हुईं। किसानों के समान मजदूर भी जारशाही के प्रबल विरोधी बन गए।

❖ जार निकोलस द्वितीय कौन था -

(18 मई 1868 – 17 जुलाई 1918) रूस का अन्तिम सम्राट (ज़ार), फिनलैण्ड का ग्रैण्ड ड्यूक तथा पोलैण्ड का राजा था। उसकी औपचारिक लघु उपाधि थी : निकोलस द्वितीय, सम्पूर्ण रूस का सम्राट तथा आटोक्रैट । रूसी आर्थोडोक्स चर्च उसे करुणाधारी सन्त निकोलस कहता है।

निकोलस द्वितीय रूस का अंतिम रोमनेव वंशी सम्राट था। वह अलेक्सांदर तृतीय का बड़ा पुत्र था। डेनिश राजकुमारी , मेरीसोफिया फ्रेडरिक डागमार मारिया फेडोरोवना (जारीना) उसकी माँ थी। 18 May 1868 को सेंट पीटर्सवर्ग (लेनिनग्राड) में उसका जन्म हुआ। जनरल डेनी लेवस्की (डेवीलोविश) इसका 12 साल शिक्षक रहा। सैनिक शिक्षा ही पाई, राज्यप्रशासन की नहीं। पैदल, घुड़सवार और तोपखाना इन तीनों सेनाओं में सैनिक रहा और कर्नल के पद तक पहुँचा। सिंहासन पर बैठने के बाद भी यह पद इसने नहीं छोड़ा।

❖ केरेन्सकी की सरकार का पतन एवं बोल्शेविक क्रांति-

जॉर्ज ल्यूवोव की सरकार में बुर्जुआ वर्ग का प्रभाव था। यह जनता की आकांक्षाओं को पूरा नहीं कर सकी। अतः, लोगों का असंतोष बढ़ता गया। इसलिए, केरेन्सकी के अधीन एक नई सरकार का गठन किया गया। इस सरकार में मेन्शेविकों अथवा उदार समाजवादियों का प्रभाव था, परंतु इस सरकार ने भी जनता की समस्याओं के निराकरण का प्रयास नहीं किया। इस सरकार ने जनतांत्रिक एवं वैधानिक सरकार की स्थापना के अतिरिक्त कुछ नहीं किया। इसने युद्ध जारी रखा। भूमि एवं व्यक्तिगत संपत्ति की सुरक्षा के कुछ उपाय किए गए, परंतु जनता इससे संतुष्ट नहीं हुई। उसका असंतोष बढ़ता गया।

इन्हीं परिस्थितियों में लेनिन स्विट्जरलैंड से वापस रूस पहुँचा। रूस की स्थिति देखकर वह क्षुब्ध हो गया। उसने कहा कि रूसी क्रांति पूरी नहीं हुई है। वांछित परिवर्तन के लिए एक अन्य क्रांति आवश्यक है। अतः , लेनिन इसकी तैयारी में लग गया। रूस पहुँचकर उसने बोल्शेविक दल का नेतृत्व ग्रहण किया। अप्रैल थीसिस (April Thesis) में उसने बोल्शेविक दल के उद्देश्य और कार्यक्रम निर्दिष्ट किए। ये थे-भूमि , शांति और रोटी की व्यवस्था करना। उसने अपने सहयोगी ट्रॉटस्की की सहायता से मजदूरों को एकजुट करना आरंभ किया। लेनिन और ट्रॉटस्की दोनों ही केरेन्सकी की सरकार को बलपूर्वक हटाना चाहते थे। अतः , 7 नवंबर 1917 (जूलियन कैलेंडर के अनुसार 25 अक्टूबर 1917) को बोल्शेविकों ने सरकारी भवनों पर सेना और जनता की सहायता से अधिकार कर लिया। केरेन्सकी रूस छोड़कर भाग गया। इस तरह , एक महान क्रांति हुई। सत्ता की बागडोर अब बोल्शेविकों के हाथों में आई। लेनिन के नेतृत्व में एक नई सरकार का गठन किया गया जिसने रूस के नवनिर्माण के लिए कार्य आरंभ किया। अक्टूबर क्रांति अथवा बोल्शेविक क्रांति के साथ ही रूसी इतिहास का नया अध्याय आरंभ हुआ।

अलेक्जेंडर फ़्योडोरोविच केरेन्स्की

(4 मई 1881 - 11 जून 1970) एक रूसी वकील और क्रांतिकारी थे जिन्होंने जुलाई के अंत से नवंबर 1917 की शुरुआत तक तीन महीने के लिए रूसी अनंतिम सरकार और अल्पकालिक रूसी गणराज्य का नेतृत्व किया

1917 की फरवरी क्रांति के बाद , वह नवगठित अनंतिम सरकार में शामिल हुए, पहले न्याय मंत्री के रूप में , फिर युद्ध मंत्री के रूप में , और जुलाई के बाद सरकार के दूसरे मंत्री-अध्यक्ष के रूप में । वह सोशलिस्ट रिवोल्यूशनरी पार्टी के सामाजिक-लोकतांत्रिक ट्रूडोविक गुट के नेता थे । केरेन्स्की पेत्रोग्राद सोवियत के उपाध्यक्ष भी थे , एक ऐसा पद जिसके पास बड़ी मात्रा में शक्तियाँ थीं। केरेन्स्की अनंतिम सरकार के प्रधान मंत्री बने , और उनका कार्यकाल प्रथम विश्व युद्ध में समाप्त हो गया । युद्ध के व्यापक विरोध के बावजूद, केरेन्स्की ने रूस की भागीदारी जारी रखने का फैसला किया । उनकी सरकार ने 1917 में युद्ध-विरोधी भावना और असहमति पर नकेल कसी, जिससे उनका प्रशासन और भी अलोकप्रिय हो गया।

अक्टूबर क्रांति तक केरेन्स्की सत्ता में बने रहे । इस क्रांति में बोल्शेविकों ने केरेन्स्की की सरकार को बदलने के लिए व्लादिमीर लेनिन के नेतृत्व वाली सरकार बनाई । केरेन्स्की रूस से भाग गए और अपना शेष जीवन निर्वासन में बिताया। उन्होंने अपना समय पेरिस और न्यूयॉर्क शहर के बीच बांटा । केरेन्स्की ने स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय में हूवर इंस्टीट्यूशन के लिए काम किया ।

❖ लेनिन कौन था ?

लेनिन बोल्शेविक कांति का प्रथम नेता था। उनका पुरा नाम ब्लादिमीर इलिच उलियानोव था। इनका जन्म 10 April 1870 में हुआ एवं मृत्यु 21 जनवरी में हुआ वह सुरू से ही कांतिकारी था।" और मार्क्सवाद से प्रभावित होकर वह रूस की तत्कालिन स्थिति को सुधार करना चाहता था। इसलिए उसने **सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी** का सदस्य बना बाद में बोल्शेविक दल का प्रथम नेता बन गया

❖ लेनिन के कार्य

लेलीन ने सत्ता समभालते ही दो मुख्य समस्याओं पर धेयान दिया।

- आन्तरीक व्यवस्था
- विदेश नीति

आन्तीरीक व्यवस्था -

- युद्ध की समाप्ति
- प्रतिक्रांति का दमन
- आर्थिक व्यवस्था
- समाजिक सुधार
- प्रशासनिक सुधार
- नए संविधान का निर्मान
- नई आर्थिक नीति

विदेश नीति

- गुप्त संधियों की समाप्ति
- राष्ट्रीयता का सिद्धांत
- साम्राज्यवाद विरोधी नीति
- कौमिन्टर्न कीस्थापना

❖ नई आर्थिक नीति से आप क्या समझते है?

लेनिन ने 1921 में एक नई आर्थिक नीति लागू की इस नीति के अनुसार किसान एवं पूँजीपति को व्यक्तिगत धन रखने की अनुमति दी।

❖ नई आर्थिक नीति की मुख्य विशेषताएँ निम्न थी।

- किसानों से अनाज की जबरन उगाही बंद कर दी गई।
- राज्य ने जीवन एवं व्यक्तिगत धन की सुरक्षा के लिए राजकिय बीमा एजेंसीयाँ स्थापित की
- अलग - अलग अस्तरों पर बैंक खोल कर बैंकीग व्यवस्था का प्रसार किया गया।
- निश्चित सरतों पर विदेशी पुंजी निवेश की अनुमति दी गई

❖ बोल्शेविक भाति का महत्व एवं पारणाम

बोल्शेविक क्रांति 1917 रूस की क्रांति आधुनिक विश्व इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना थी। 1789 की फ़्रांसीसी क्रांति मूल रूप से एक की राजनीति कांति थी। लेकिन 1917 कि रुस की क्रांति राजनीतिक , आर्थिक और एक समाजीक क्रांति थी।

❖ बोल्शेविक क्रांति का महत्त्व एवं परिणाम निम्न थे।

- इस क्रांति के दौड़ान व्यक्तिगत धन को समाप्त कर दिया गया।
- बैंको का राष्ट्रीय करण किया गया।
- जमीन को समाजीक धन घोसीत की गई।
- किसानों को छूट दी गई।
- नगरी में बड़े मकानों का विभाजन कर दिया गया।
- सेना की नई वर्दी बनाई गई।

❖ बोल्शेविक क्रांति का विश्व पर प्रभाव

वोल्शेविक क्रांति का विश्व पर निम्न रूप से प्रभाव पड़ा –

- पूँजीवादी राष्ट्री में आर्थिक सुधार
- सम्यवादी सरकारों की स्थापना
- सम्राज्यवाद के पतन की प्रतिक्रिया में त्रिव्रता
- नया शक्ति संतुलन
- सर्वहारा वर्ग के सम्मान में वृद्धि

❖ लेनिन के बाद सोवियत संघ

जॉसेफ स्टालिन के अधीन सोवियत संघ-लेनिन की मृत्यु के बाद भी सोवियत संघ प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होता रहा। आर्थिक विकास के लिए सतत प्रयास किए गए। लेनिन के बाद सत्ता स्टालिन (1879-1953) के हाथों में आई। स्टालिन का अर्थ है स्टील का आदमी (man of steel) यानी फौलादी पुरुष। स्टालिन के समय अनेक आर्थिक एवं अन्य समस्याएँ विद्यमान थीं। अतः , सुनियोजित आर्थिक विकास के लिए 1928 में प्रथम पंचवर्षीय योजना लागू की गई। तीन पंचवर्षीय योजनाओं से औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि हुई और अर्थव्यवस्था में सुधार आया। तेल , कोयला और स्टील उद्योग में बढ़ोतरी हुई। अनेक औद्योगिक नगर अस्तित्व में आए। कृषि का आधुनिकीकरण हुआ। साथ ही , वैज्ञानिक प्रगति भी हुई। सरकार ने श्रमिकों की स्थिति में सुधार लाने के लिए भी कुछ प्रयास किए। श्रमिकों और किसानों की शिक्षा के लिए स्कूलों की व्यवस्था की गई। यह व्यवस्था भी की गई कि वे विश्वविद्यालयों में प्रवेश पा सकें। कामकाजी महिला श्रमिकों के बच्चों की देखभाल की व्यवस्था की गई। श्रमिकों के लिए आवास एवं चिकित्सा की सुविधा भी उपलब्ध कराई गई